मेटाबोलिक सिंड्रोम और फैटी लिवर रोग

चयापचय सिंड्रोम और फैटी लिवर के बीच घनिष्ठ संबंध है। फैटी लिवर को लिवर का मेटाबॉलिक सिंड्रोम माना गया है। चयापचय सिंड्रोम एक ऐसी स्थिति है जो एक साथ होती है। शहर के निवासियों में बच्चों सहित 30% की व्यापकता दर के साथ यह एक सामान्य स्थिति है। मेटाबोलिक सिंड्रोम हृदय रोग, टाइप 2 मधुमेह, फैटी लिवर और फैटी लिवर रोग के उच्च जोखिम से जुड़ा हुआ है।

यूएस नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ हेल्थ ने चयापचय सिंड्रोम को एक चिकित्सा स्थिति के रूप में परिभाषित किया है, जहां कम से कम तीन या अधिक निम्न पांच नैदानिक विशेषताएं मौजूद हैं:

1. कमर की नाप ऊपर बताए गए निश्चित माप से बड़ी है।
2. रक्त में उच्च ट्राइग्लिसराइड का स्तर सामान्य की ऊपरी सीमा से अधिक है, जो 150mg / dl या 1.7 mmol / लीटर है। यदि मरीज कोलेस्ट्रॉल कम करने वाली दवाएं ले रहे हैं, तो उनको उच्च ट्राइग्लिसराइड्स हैं।
3. अच्छे कोलेस्ट्रॉल- अच्छे कोलेस्ट्रॉल के निम्न स्तर को एचडीएल-कोलेस्ट्रॉल कहा जाता है। एचडीएल-कोलेस्ट्रॉल के चयापचय सिंड्रोम स्तर में पुरुषों में 40mg / dl (1.04 mmol / लीटर) और महिलाओं में 50mg / dl (1.3 mmol / लीटर) से कम है।
4. उच्च रक्तचाप- 130/85 मिमी Hg से अधिक रक्तचाप या रोगी रक्तचाप को कम करने के लिए दवाएँ ले रहा है।
5. उपवास रक्त शर्करा का स्तर 100mg / dl या 5.6 mmol / लीटर से अधिक है।

मेटाबॉलिक सिंड्रोम वाले मरीजों में मौजूद सभी पांच नैदानिक विशेषताओं में फैटी लिवर होने की 90% संभावना होती है।